प्रातःक्लास 17/5/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बैठ समझाते हैं। रूहानी बाप को दाता कहा जाता है। वह आपे ही सभी कुछ बच्चों को देते हैं। आते ही हैं विश्व का मालिक बनाने। कैसे बनना है यह बच्चों को सभी समझाते, डायरैक्शन देते रहते हैं। दाता है तो सभी आपे ही देते रहते हैं। मांगने से मरना भला। कोई भी चीज़ मांगनी नहीं होती है। शक्ति, कृपा आर्शीवाद कई बच्चे मांगते हैं। भक्ति मार्ग में मांग–2 माथा भटकाये–2 सारी सीढ़ी उतरते आये हैं। अभी मांगने की कोई दरकार नहीं। बाप कहते हैं डायरैक्शन पर.....चलो। एक तो कहते हैं बीती को कब चितवो नहीं। ड्रामा में जो कुछ हुआ पास्ट हो गया। उनका विचार न करो। रिपीट न करो। बाप तो सिर्फ़ दो अक्षर ही कहते हैं मामेकं याद करो। बाप डायरैक्शन अथवा श्रीमत देते हैं। उन पर चलना बच्चों का काम है। यह है सबसे श्रेष्ठ डायरैक्शन। कोई कितने भी प्रश्न आद करेंगे बाप तो दो अक्षर में ही समझावेंगे। मैं हूँ पतित–पावन। तुम मुझे याद करते रहो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। बस। बाप को याद करना है। याद के लिए कोई डायरैक्शन दिया जाता है क्या। बाप को याद करना है। कोई रढ़ी (ब)ाका नहीं। अदंर में सिर्फ़ बेहद के बाप को याद करना है। दूसरा डायरैक्शन क्या देते हैं 84 के चक्र को, याद करो। दैवीगुण धारण करो; क्योंकि तुमको देवता बनना है। देवताओं की महिमा तो तुमने आधा कल्प की है। (बच्चों का आवाज़ हुआ) अभी यह डायरैक्शन सभी सेन्टर्स वालों को दिये जाते हैं कि बच्चों को कोई भी न ले आवे। कोई प्रबन्ध करना है उन्हों का। बाप से जिनको वर्सा लेना होगा वह आपे ही प्रबन्ध करेंगे। यह रूहानी बाप की यूनिवर्सिटी है इसमें छोटे बच्चों की दरकार नहीं। ब्राह्मणियों का काम है सर्विसएबुल लायक जब बने तब उनको रिफ्रेश करने ले आना है। कोई भी भल बड़ा आदमी हो वा छोटा हो। यह है यूनिवर्सिटी। यहां बच्चों को ले आते हैं, यह नहीं समझते हैं कि यूनिवर्सिटी है। समझते हैं बाबा–म(म्)मा, बहन–भाई है। यहां तो मुख्य बात है यह यूनिवर्सिटी है। इसमें पढ़ने वाले बड़े अच्छे समझदार चाहिए। कच्चे भी डिस्टर्बन्स करेंगे; क्योंकि बाप ... की याद में नहीं होंगे। तो बुद्धि इधर–उधर भटकती रहेगी। नुकसान कर देंगे। ..... से ही यहां ऐसे बचत वाले याद में रह न सके। पहले से उन बचत वालों के विघ्न बहुत हैं फिर और ही एडीशन होंगे। इसमें बच्चों को ही नुकसान है। कोई तो जानते ही नहीं कि यह गॉड फादरली यूनिवर्सिटी है। यहां तो मनु(ष्य) से देवता बनना होता है। बाप कहते हैं भल गृहस्थ व्यवहार में, बाल–बच्चों साथ रहो, सिर्फ़ एक हप्ता तो क्या 3–4 रोज़ भी काफी है। नॉलेज तो बहुत सहज है। बाप को पहचानना है। बेहद के बाप को पहचानने से बेहद का वर्सा मिलेगा। कौन सा वर्सा? बेहद की बादशाही। ऐसे मत समझो प्रदर्शनी अथवा म्युज़ियम आद में सर्विस नहीं होती है। ढेर अनगिनत प्रजा बनती है। ब्राह्मण कुल सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी तीनों यहां स्थापन होती है। तो यह बहुत बड़ी यूनिवर्सिटी है। बेहद का बाप पढ़ाते हैं, एकदम दिमाग ही पूर(ा) हो जाना चाहिए; परन्तु बाप है साधारण तन में। पढ़ाई भी साधारण रीति है। कोई टेबुल, कुर्सियां, कोच आदि तो नहीं है; इसलिए मनुष्यों को जंचता नहीं है। गॉड फादरली यूनिवर्सिटी.....ऐसे होगी। बाप कहते हैं मैं हूँ ग़रीब निवाज़। ग़रीबों को ही पढ़ाता हूँ। साहूकारों को ताकत ही नहीं पढ़ने की। उनकी बुद्धि में तो महल माड़ियां ही रहती हैं। ग़रीब ही वहां साहूकार बनते हैं। साहूकार ग़रीब बनेंगे। यह कायदा है। दान कब साहूकारों को दिया जाता है क्या? यह भी अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान है। साहूकार दान तो ले नहीं सकते। बुद्धि में बैठेगा ही नहीं। वह अपने हद के रचना धन–दौलत आदि में ही फंसे रहते हैं। उन्हों के लिए तो यहां ही जैसे स्वर्ग़ है। कहते हैं हमको दूसरे स्वर्ग़ की दरकार ही नहीं। कोई बड़ा आदमी मरा तो भी कहेंगे यह स्वर्ग़ पधारा। ..... ही कह देते हैं स्वर्ग़ पधारा। तो ज़रूर अभी नर्क में ठहरे ना; परन्तु इतनी ..... बुद्धि है तो समझो नहीं ..... है स्वर्ग़ क्या है। कुछ नहीं जानते। तुम्हारी यह कितनी बड़ी यूनिवर्सिटी है। बाप कहते हैं जिनकी ..... को ही आकर पढ़ाता हूँ। बाप जब आये तब ताला खोले। सन्यासी उदासी

.....को ताला लगा हुआ है। बाप खुद आकर डायरैक्शन देते हैं कि तुम्हारे बुद्धि का ताला कैसे खुलेगा। बाप से (कु)छ भी मांगना नहीं है। इसमें निश्चय चाहिए। कितना मोस्ट बिलवेड बाबा है। जिसको भक्ति मार्ग में याद करते.....। जिसको याद करते हैं तो ज़रूर कब आवेंगे भी ना। याद करते ही हैं फिर से रिपीट होने के लिए। आकर बच्चों को ही समझाते हैं। बच्चों को फिर बाहर वालों को समझाना है कि कैसे बाबा आया हुआ है क्या कहते (हैं)। बाप कहते हैं बच्चे तुम सभी पतित हो। मैं ही आकर तुमको पावन बनाता हूँ। तुम आत्मा जो पतित बने....., अभी सिर्फ़ मुझ पतित–पावन बाप को याद करो। मुझ सुप्रीम आत्मा को याद करो। इसमें कुछ भी मांगने की दरकार नहीं। तुमने भक्ति मार्ग में आधा कल्प मांगा ही मांगा है। मिला कुछ भी नहीं। अभी मांगना बन्द करो। हम आपे ही तुमको देता रहूँगा। बाप का बनने से वर्सा तो मिलेगा ही। तो बा(ि)लग बच्चे वह तो झट बाप के वर्से को समझ जाते हैं। बाप का वर्सा है ही स्वर्ग़ की बादशाही 21 पीढ़ी। यह तो तुम जानते हो जब नर्कवासी हैं तो ईश्वर अर्थ दान–पुण्य आद करने से अल्पकाल के लिए सुख मिलता है। जिसको काग विष्टा समान सुख कहते हैं। सन्यासियों को तुम कहो बेहद का वर्सा लो तो कब मानेंगे नहीं। कहेंगे सुख तो काग विष्टा समान है। सभी नर्क में गोते खाते रहते हैं। आजकल तो गृहस्थी को काम करने लिए बहुत युक्तियां रचते हैं। अभी बाप कहते हैं इन जंज़ीरों से निकलो। तुम इन निवृत्ति मार्ग वालों के फॉलोवर्स क्यों बने हो; परंतु यह तो जानते हैं फिर भी तुम बनेंगे ज़रूर। फॉलो तो कोई करते ही न(हीं) सभी है झूठ ही झूठ। पैसे कमाने की कितनी युक्ति रचते हैं। मनुष्य धर्माऊ भी निकालते हैं। अक्सर करके व्यापारी लोग निकालते हैं। जो व्यापारी होंगे वह कहेंगे हम बाप से व्यापार करने आये हैं। बच्चे बाप से व्यापार करते हैं। बाप की प्रॉपर्टी लेकर फिर उनसे श्राद आद खिलाते हैं। दान–पुण्य आद करते हैं। धर्मश..... मन्दिर आद बनाते हैं। तो उस पर बाप का ही नाम रखेंगे; क्योंकि जिससे प्रॉपर्टी मिली उनके लिए तो ज़रूर करना चाहिए ना। वह भी सौदा हो गया ना। वह है सभी जिस्मानी बातें। अभी बाप कहते हैं बीती को चितवो नहीं। उल्टी–सुल्टी कोई भी बात सुनो ही नहीं। कोई उल्टी–सुल्टी प्रश्न पूछे बोलो, इन बातों में जा(ने) की दरकार ही नहीं। तुम पहले बाप को तो याद करो। भारत का प्राचीन राजयोग नामी–ग्रामी है। जितना याद करेंगे दैवी गुण धारण करेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। यह है यूनिवर्सिटी। एमऑबजेक्ट क्लीयर है। पुरुषार्थ कर ऐसा बनना है। दैवी गुण धारण करनी है। किसको दुःख नहीं देना है। कोई भी प्रकार का। दुःख हर्ता–सुख कर्ता बाप के बच्चे हैं ना। सो तो सर्विस से ही मालूम पड़ेगा। बहुत–2 नये–2 भी आते हैं 20–25 वर्ष वालों से भी 10–20 दिन वाले तीखे हो जाते हैं। तुम बच्चों को फिर आ(प) समान बनाना है। जब तक ब्राह्मण न बने हो तो देवता कैसे बनेंगे? ग्रेट–2 ग्रैंड फादर तो ब्रह्मा है ना। जा(जो) होकर जाते हैं उनको गासन करते हैं। फिर ज़रूर वह आवेंगे। जो भी त्योहार आद गाये जाते हैं सभी होकर गये हैं। फिर होंगे। इस समय सभी त्योहार आद हो रहे हैं। रखड़ी बंधन आदि..... सभी का राज़ बाप समझाते रहते हैं। व(ह) बच्चे तो ज़रूर पावन बनने चाहिए। पावन बाप को बुलाया है तो बाप रास्ता बताते हैं। कल्प–2 जिसने ..... से जो वर्सा लिया था वही एक्युरेट चलती रहती है। तुम भी साक्षी होकर देखते हो। बाप दादा भी स(ाक्षी) हो देखते हैं। यह कहां तक ऊँच पद पा सकते हैं। उनके कैरेक्टर्स कैसी है टीचर को तो मालूम र(हेगा) ना। कितने को आप समान बनाते हैं। कितना समय याद में रहते हैं। सभी मालूम पड़ जाता है। यह .....बड़ी बेहद की यूनिवर्सिटी है। पहले तो यह बुद्धि में रखना चाहिए। यह गॉडली यूनिवर्सिटी है। गॉडली वर्ल्ड यूनिवर्सिटी नहीं। गॉडली यूनिवर्सिटी है। यूनिवर्सिटी है ही नॉलेज के लिए। वह है मनुष्य के लि(ए) हद की यूनिवर्सिटी। यह तो है बेहद की यूनिवर्सिटी है। दुर्गति से सद्गति में ले जाने वाला हेल को बनाने वाला। इनकी तो सभी आत्माओं के तरफ दृष्टि जाती होगी। सभी का कल्याण करना है। सभी को

जाना है। न सिर्फ़ तुमको; परन्तु (सा)रे वर्ल्ड की आत्माओं को याद करते होंगे। उसमें भी पढ़ाते हैं बच्चों को। ..... भी समझते हो जैसे नम्बरवार जो आये हैं वह फिर जावेंगे भी ऐसे। सभी आत्माएं नम्बरवार ही आती है। जावेंगी भी नम्बरवार। तुम भी नम्बरवार कैसे जावेंगे वह सभी समझाया जाता है। इसमें भी बेहद की ..... बात जाती है। सभी को जाना है ज़रूर। कैसे जावेंगे क्या करेंगे इसमें हम क्यों माथा मारे। कल्प पहले जैसे हुआ (था) वही होगा। सारी सृष्टि का उद्धार तो होता है ना। पुरानी दुनियां से नई बनती है। यह भी तुमको सम(झा)या जाता है। तुम फिर कैसे नई दुनियां में आवेंगे नम्बरवार। जो नई दुनियां में आने वाले हैं उनको ही समझाया जाता है। बाप को जानने से अपने धर्म को और सभी धर्मों के सारे झाड़ को विश्व को तुम जान जाते हो। बाप नॉलेजफुल है। तुमको भी बैठ सुनाते हैं। इसमें कुछ भी मांगने की दरकार नहीं। आर्शीवाद भी नहीं। लिखते हैं बाबा दया करो। कृपा करो। बाप तो कुछ भी नहीं करेंगे। बाप आया ही है ज़रूर रास्ता बताने। ऐसे छी–2 दुनियां में तो 3–4 रोज़ ही आना चाहिए; परन्तु पत्थर बुद्धियों से कितना माथा मारना पड़ता है। कितने पतित हैं। ड्रामा में पार्ट ही मेरा है सभी को पावन बनाने का। ऐसे ही पार्ट बजाता हूँ जैसे कल्प–2 बजाया है। जो पास्ट हुआ अच्छा या बुरा.....में था। चिंतन कोई भी बात का नही करना है। हम आगे बढ़ते रहते हैं। यह बेहद का ड्रामा है ना। सारा चक्र पूरा होकर फिर नई सिरे चलेगा। जो जैसा पुरुषार्थ करते हैं ऐसा पद पा लेते हैं। मांगने की दरकार ही नहीं। भक्ति मार्ग में तुमने अथाह मांगा है। तुमको अल्पकाल का सुख मिलता है। सीढ़ी नीचे ही उतरते आये हैं। सभी पैसे खलास कर दिये हैं। यह भी ड्रामा में सारा बना हुआ है यह सिर्फ़ समझाते हैं आधा कल्प भक्ति करते शास्त्र बनाते कितना खर्चा होता है। अभी तो तुमको कुछ भी खर्चा करने की दरकार ही नहीं। बाप तो दाता है ना। दाता को दरकार नहीं है। वह तो आये ही हैं देने लिए। ऐसे मत समझो शिवबाबा को हमने दिया है। अरे शिवबाबा से तो बहुत–2 मिलता है ना। टीचर के पास स्टूडेन्ट लेने लिए आते हैं ना। गुरू से भी लेने आते हैं उस लौकिक बाप, टीचर, गुरू से तुमने घाटा ही पाया। अभी बच्चों को श्रीमत पर चलना है। तब ही ऊँच पद पा सकते हैं। यह शिवबाबा है डबल श्री–श्री। तुम तो बनते हो सिंगल श्री। श्री ल. श्री ना. कहा जाता है ना। श्री ल. श्री ना. वो हो गये। विष्णु को श्री–2 कहेंगे; क्योंकि जोड़ी है। फिर भी दोनों को बनाते कौन हैं। ..... एक श्री–श्री है बाकी श्री–श्री तो कोई होते ही नहीं। आजकल तो श्री लक्ष्मी–नारायण श्री राम–सीता, सीताराम नाम भी रखाते रहते हैं। तो बच्चों को यह धारण करना। है बहुत खुशी में रहना है। बेहद का बाप मिला बाकी क्या। यह है गॉडली यूनिवर्सिटी। स्पीचुअल कॉनफ्रेंस भी आजकल होती रहती है; परन्तु स्प्रीचुलअ का अर्थ नहीं समझते। रूहानी नॉलेज तो सिवाय एक बाप के कोई दे न सके। बाप सभी रूहों का बाप है ना। उनको स्प्रीचुअल कहते हैं। स्प्रीचुअल नॉलेज ज़रूर बाप ही देंगे। फ्लासफी को भी स्प्रीचुअल कह देते हैं। यह तो तुम समझते हो (यह) जंगल है। जंगल में कौन रहते हैं? डाकू। गवर्मेन्ट को भी बहुत ..... डाक लगाते रहते हैं। डाका ही डाका है। बहुत पकड़ते भी हैं तो उनको क्या कहें। बाप ने तो कहा है यह कोसघर है। हिंसा ही हिंसा होती है। अहिंसा परमो(धर्म) देवी–देवता धर्म गाया जाता है। कोई मार–पीट आद की बात नहीं। गु(स्)सा करना भी हिंसा हो जाता है। फिर सेमी हिंसा कहो कुछ भी कहो। य(हां) तो बिल्कुल अहिंसक बनना है। कोई भी मंसा, वाचा, कर्मणा खराब बात न होनी चाहिए। बच्चों को अपने ऊपर सम्भाल रखनी है। अच्छा आज पार्टी जाने वाली है। अच्छा बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते। भमरी देखो कैसे भूं–2 करके कीड़े को आप समान बनाती है। तुम भी ऐसे हो। तुम भूं–2 करते हो तो पर आ जाते हैं। तुम उड़ जाते हो। दृष्टांत यहां का है। तुम ब्राह्मण.....कीड़ों को ज्ञान योग की भूं–2 करते हो। कमाल है ना। एक कीड़े को आप समान देवता बनाना कितना ..... है।....बाप कहते हैं सभी तरफ से बुद्धि योग हटाकर घर को याद करो। राजाई को याद करो। बाकी और कोई मेरे पास पहुँच नहीं सकते। ओम।